Some hon. Members *rose*—

MR. SPEAKER : I propose to call a meeting of the Business Advisory Committee.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur) : Many of the Members may not be present today. It should be announced at least a day in advance.

MR. SPEAKER : The discussion of the Mid Term Appraisal is pending for a long time.

SHRI S. M BANERJEE : I hope sufficient time will be allotted to it.

MR SPEAKER : I am calling a meeting of the BAC We will discuss it there.

श्री हुकम चन्द कछवाय मुरेना: अध्यक्ष महोदय, मैं आप की आज्ञा से एक जानकारी चाहता हूं। शिड्यूल्ड काम्ट्स और शिड्यूल्ड ट्राइब्ज सम्बन्धी बिल बहुत समय से पड़ा हुआ है। उस पर कब विचार किया जायेगा ?

अध्यक्ष महोदय: माननीय सदस्य को मालूम होना चाहिए कि इस बारे में कुछ कहने से पहले मुझे लिख कर भेजना पड़ता है। आप थोड़ी तक्लीफ किया करें। आप बिजनेस एडवाइजरी कमेटी में आ जायें। हम बात कर लेंगे और चाय का प्याला भी पीयेंगे।

SHRI SAMAR GUHA (Contai) : Sir, I want to draw the attention of the Minister of Foreign Trade, through you, to two big events which took place recently, namely, Indo-Bangladesh Treaty and the Indo-Bangladesh Border Trade Treaty. It is naturally expected that the House should be allowed to make some observations in praise of that. It would be in the fitness of things that these two things are taken into consideration by the House, for which at least two hours are quite necessary.

Secondly, for the last two weeks there is an agitation going on in the Indian Airlines by the ground engineers, resulting in serious dislocation of flight schedules and even suspension of some services. I have given a Calling Attention Notice on that.

MR. SPEAKER : Will he please listen to me ? If he wants a discussion, he can give it in writing. It will be placed before the BAC. This statement is about the business for the coming week. If he wants to have something which is not there, let him write to me so that I will place before the BAC.

SHRI S. M BANERJEE : I have nothing against the business which has been announced for next week. I would only submit that 30,000 census employees are without employment. We are getting telegrams from all over the country. We want the Minister to make a statement during next week.

MR. SPEAKER : Give it to me in a concrete shape. I will pass it on to the Minister.

SHRI S M. BANERJEE : I have already given a Calling Attention Notice. Let the Minister say as to how those employees are going to be absorbed.

SHRI SAMAR GUHA : My point is also similar, about the agitation by the ground engineers of Indian Airlines because of which people have to remain in aerodromes for hours. I gave notice of a Short Notice Question. But it has not been accepted.

MR. SPEAKER : My observation is the same; if you send it to me in writing, I will forward it to the Minister.

12.38

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS

MR. SPEAKER : The House will now take up further consideration of the Motion of Thanks on the President's Address. SHRI Shashi Bhushan will continue his speech. He has already taken 9 minutes. He may take another 4 or 5 minutes.

श्री शशि भूषण (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, आज आप ने समय पर नियन्त्रण लगा दिया है, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि कल जब मैं भाषण दे रहा था, तो श्री कछवाय ने बार-बार कोरम का सवाल उठाया और मेरा समय लिया मैं चाहूंगा कि कम से कम आज वह मुझे अपना भाषण करने दें ।

श्री हुकम चन्द कछवाय (मुरेना) माननीय सदस्य ऐसी कोई बात न कहे, जिस पर हमे कुछ कहना पड़े ।

श्री शशिभूषण आज मैं उन की तारीफ करूंगा ।

अध्यक्ष महोदय आप किसी दिन श्री कछवाय से बात कर लें । ऐसा तो रोज होता है। मैं आप को ऐसे समय बुलाऊंगा, जब कोरम का सवाल न उठाया जाये । मैं आप को इस बारे मे इत्तिला दे दूंगा ।

श्री शशि भूषण जब 007 जेम्ज बांड, श्री किसिंगर, रावलपिंडि से पीकिंग गये थे, तो उस वक्त देश का वातावरण इस तरह का बनाया जा रहा था कि लोगों को यह बताया जा रहा था कि हमारे देश के साथ कोई भी नही है, देश अकेला है, एक भय का वातावरण बनाया जा रहा था, लाखो शरणार्थी देश मे आ रहे थे, एक सत्याग्रह का नाटक शुरू हुआ था । लेकिन भारत और रूस की शान्ति और मैत्री की संधि का ऐलान होने के बाद वह वातावरण दूर हुआ और जो तैयारी बराबर की जा रही थी मुक्ति वाहिनी गुरिला सैनिक तैयार करने के लिए और बंगलादेश के लोगो की मदद करने तथा स्वधीनता के लिए, उस में कामयाबी मिली । प्रधान मंत्री ने शुरू से आखिर तक जो भी कदम उठाये, वे समय के मुताबिक उठाये । उस का फल यह हुआ कि भारत की नीति सही साबित हुई और दुनिया के जो जो देश बंगला-देश की मान्यता देते जा रहे हैं, वे हमारी नीति का समर्थन कर रहे हैं । जैसा मैं ने कहा कि मैं आज तारीफ ही करूंगा अपने विरोधियों की, बुराई नहीं करूंगा मैं यह कहना चाहता हू कि जनसंघ ने बहुत सा हमारा काम खुद ही पूरा कर दिया । जिस का हाथ पकडा उस का बेड़ा गर्क हो गया । राजाओ का साथ दिया जनसंघ ने, राजा साफ हो गए । बैंक के मालिको का साथ दिया, बैंक के मलिक साफ, अकालियों का पजाब मे साथ दिया वह साफ, कागो का साथ दिया, वह साफ, संयुक्त समाजवादी पार्टी का साथ दिया, वह साफ, स्वतन्त्र पार्टी का साथ दिया, वह साफ, जिस का हाथ पकडा उसी का बेडा गर्क हो गया ।

श्री हुकम चन्द कछवाय अब नम्बर आप का है ।

श्री शशिभूषण जिस का साथ दिया, वाह साफ । विदेशीनीति मे च्याग काई शेक की साथ दिया, उस का बेडा गर्क, अमेरिकी नीति का साथ दिया, उस का भारत मे बेड़ा गर्क । कुछ ऐसी भ मासुर यह जनसंघ पार्टी बन गई कि जिस का साथ देते है वही साफ हो जाता है । वह हमारा ही काम कर रहे है । दिल्ली मे अब की बार मुस्लिम लीग का साथ दिया अब मुस्लिम लीग के भी अन्तिम दिन आ गए । मुझे पूरा विश्वास है कि वह अब ज्यादा देर वह नहीं टिकेगी । यहा दिल्ली के चुनाव में मुस्लिम लीग को जनसंघ ने पूरी मदद की क्यों कि पाकिस्तनि की दूकान तो अब बन्द हो रही है, उस मे भी ५ आने बगला देश मे सेकुलरिज्म आ गया । एक रुपये में नौ आने बगला देश में सौशलिस्ट सरकार बन रही है । वह दूकान तो बन्द हो गई । जब झुट्टो की दूकान बन्द हो जायगी तो हिन्दुस्तानी झुट्टो की दूकान कैसे चलेगी । उस के लिए दिल्ली में लाखों रुपया

खर्च कर के जनसंघ द्वारा मुस्लिम लीग को बुलाया गया। उन को जिताया गया। वह एक दूकान शुरू हो गई, दूसरी साथ लग गई। लेकिन देश की जनता अब ज्यादा दिन गुमराह नहीं होगी। अभी पिछले दिनों बिहार मुस्लिम बचाओ सम्मेलन बुलाया गया पटना में और उस में वही चार प्रतिक्रियावादी पार्टिया शामिल हुई जिस का कि मैं ने जिक्र किया सोपा-संघ-स्वतन्त्रां कांग्रो। मैं पूछना चाहता हूं कि बिहार के मुसलमान हिन्दुस्तान से गए किस के छुरे के डर से गये थे ¿ किस ने भेजा मंगाया इनको ? भेजने वाले वह और प्रान बचाने वाले यह। प्राज चूंकि श्री निक्सन नही चाहते कि उन बिहारियों का ट्रायल हो, श्री भुट्टो तथा श्री चाम्रो नही चाहते तो हिन्दुस्तान मे ऊन के साथी कैसे चाह सकते थे ? प्राज जिनों ने 30 लाख निर्दोष लोगों की नरहत्याएं की हैं, जिन लोगो ने करोड़ व्यक्तियो को शरणार्थी बना दिया, आज उन का ट्रायल हो, उस ट्रायल के खिलाफ अमेरिका की बात तो समझ मे आती है, वह इसलिए विरोध करते है कि सी० आई० ए० ने खुदा वहां के बगाली इंटेलेक्चुअल्स की लिस्ट देकर उन का पाक बिहारियो से कत्ल कराया लेकिन हिन्दुस्तान मे आज उस के समर्थन में बिहार मे मुस्लिम बचाओ सम्मेलन प्रतिक्रियावादियो ने किया। वह सारे बिहारी नही हैं, जो बंगला नही बोलते है उन को वह बिहारी कहते हैं। लेकिन जिन लोगों ने कत्ले आम किया क्या उन के ऊपर केस नहीं चलना चाहिए ? तो यह यह बिहार मुस्लिम बचाओ सम्मेलन उस चुनाव के जमाने में क्यों किया गया ? क्यों लोगों की आंखों में धूल झोंका गया ?

अब कहते हैं कि हम प्रजातंत्र में विश्वास करते हैं। काश्मीर में भारत सरकार हमेशा से सतर्कता बरतती आई है, काश्मीर के चुनाव में इस बात का ख्याल किया गया कि सारी दुनिया की आंखें वहां लगी हुम इस बात की कोशिश करते हैं कि कोई ऐसी बात वहां न हो कि जिस से दुनिया में हमारे देश का नाम खराब हो। लेकिन आज श्री चाऊ कहता है कि कश्मीर का एलेक्शन सच्चा नहीं हुआ, श्री भुट्टो कहते हैं कि सच्चा नहीं हुआ, श्री निक्सन कहते है कि अच्छा नहीं हुआ और अटल बिहारी जी कहते हैं कि वहा के प्रजातंत्रीय चुनाव पर सन्देह है...

श्री आर वी बड़े: (खरगोन:) किस ने कहा ? यह कभी नही कहा उन्होंने।

श्री शशिभूषण: अटल बिहारी जी ने कहा है। कल अपने भाषण मे उन्होंने कहा कि देश मे जो चुनाव हुए हैं वह भी मुनासिब नहीं तथा सरकारी चुनाव हुए हैं। यही बात जो विदेशों मे हमारे दुश्मन है वह कहते हैं। आखिर, पिछले चुनावों में उस वक्त जब भुट्टो का नामानिशांक नहीं था...

अध्यक्ष महोदय कुछ भी हो, दूसरे मुल्क के जो प्रेसीडेंट है उन को न ही लाएं दरमियान मे तो अच्छा है, हमारे रूल्स एलाऊ नहीं करते इस तरह से उन का जिक्र करने को।

एक माननीय सदस्य: यह सरकारी प्रतिनिधि नहीं हैं।

MR. SPEAKER : There should be no reflection on the head of a State.

श्री शशिभूषण: मैं तो जो वहां के सरकारी नेता बोलते हैं, रोज हमारे खिलाफ कहते हैं, वही कह रहा हूं। पिछले चुनाव में हम लोग जीत कर आए। कहा कि रूसी स्याही बैलट पेपर में लगायी। जब यह कहा गया तो चीन के अखबारों में लिखा गया, पाकिस्तान के अखबारों में लिखा गया, अमेरिका के अखबारों में लिखा गया। आखिर हिन्दुस्तान के प्रजातंत्र की इस से बदनामी नहीं होती ?

श्री शशिभूषण]

55 करोड़ जनता का अपमान नहीं होता। जिस प्रजातंत्र के लिए 30 लाख लोग कुर्बान हुए बंगला देश में और आज हमारे देश में जो दुनिया का सब से बड़ा सब से मजबूत प्रजातंत्र है, जिस पर हमें फख्र है, उस के नाम लांछन लगाए उन की जनसंघ पार्टी के नेता ? और मैं उनको झूठा नहीं कहता, हिन्दुस्तान का हाई-कोर्ट झूठा कहता है, हिन्दुस्तान का सुप्रीम कोर्ट झूठा कहता है। अगर उन्हें प्रजातंत्र पर विश्वास होता तो श्री मधोक इस ढंग की बातें कर सकते थे ? जो दुनिया में हमारे विरोधी कहते हैं जहां दूर दूरबीन से भी प्रजातंत्र नहीं दिखाई देता है उन देशों के अखबार इस बात के लिए कहते हैं कि हमारा चुनाव धोखा है।

अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रपति जी का जो भाषण हुआ, उन्हों ने देश के सामने हमारा जो विदेशों में और विश्व में मान और गौरव बढ़ा है उस संबंध में चर्चा की, उन्होंने जो देश में आर्थिक तरक्की हुई उसकी चर्चा की। उन्होंने जो अपने क्षेत्रों में राष्ट्रीकरण हम ने किया है उस का चर्चा की और बड़ा अच्छा होता कि वह चर्चा करते कि विदेशी बैंकों का भी राष्ट्रीयकरण किया जाय क्यों कि उस से मैं नहीं समझता कि हमारे देश का कोई पैसा बाहर जायगा। आज भी बहुत ज्यादा विदेशों से जो हमारा व्यापार है वह हमारे देश के राष्ट्रीय बैंक करते हैं और हम उस में पूरे पूरे समर्थ हैं। आइन्दा आने वाले वक्त में जैसे हम शहरी और गांवों की सम्पत्ति पर नियंत्रण करने की योजना बना रहे हैं उसी तरह देश में शिक्षा का राष्ट्रीकरण होना चाहिए और वह आज के युग की सब से बड़ी मांग है। समाजवाद की तरफ बढ़ते हुए कदम तब तक लड़खड़ाते रहेंगे जब तक शिक्षा के संस्थान उन लोगों के हाथ में रहेंगे जो सम्प्रदायवादी हैं और जो धर्म के नाम पर आज एक दूसरे के दिलों को बांटते हैं। तो मैं चाहता हूं कि इस दिशा में सक्रिय कदम उठाया जाय। राष्ट्रपति जी इस की चर्चा करते तो अच्छा था लेकिन अब मुझे पूरी उम्मीद है कि अगले साल तक इस में से बहुत अंश तक हम अपनी आस्था-विश्वास पूरा कर सकेंगे और राष्ट्रपति जी इस की पुनः चर्चा करेंगे।

राष्ट्रपति जी के संबंध में मैं ने कहा कि हमें फख्र है कि हमारे देश में एक ऐसा राष्ट्रपति है जो प्रजातंत्र और लोकतंत्र पर विश्वास करता है, जो सही माने में समाजवादी नेता है और देश के लिए उन का चुना जाना भी बड़े गौरव की बात है। अगर कहीं वह न चुने गए होते और जो यहां राष्ट्रीय संविद सरकार बनाने की योजना चल रही थी, और जो उन के मुकाबिले में खड़े थे वह अगर जीत गए होते तो यह सही बात है कि इस देश से बंगला देश के लोग तो मदद नहीं मांग सकते थे। अगर यहां भी अमेरीकी पप्पेट सरकार होती, साम्राज्यवादी के समर्थक लोग होते, सम्प्रदायवादी राष्ट्रीय सरकार में होते तो बंगला देश आजाद न होता और आज बंगला देश के आजाद होने के बाद जो देश की गरिमा और शान बढ़ी वह न बढ़ी होती ...

श्री हुकम चन्द कछवाय: आप की प्रधान मंत्री ने ही उन को खड़ा किया था।

श्री शशिभूषण: उन को आप की पार्टी की साजिश का पता नहीं था। जब उन को साजिश का पता लग गया कि आप लोग उस साजिश में शामिल हैं तो उस के बाद उन्होंने समर्थन नहीं किया।

मैं यह कह रहा था कि दुनिया के जो छोटे राष्ट्र साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ रहे हैं चाहे वह अंगोला हो, चाहे गिनी बिसोवा हो, चाहे उत्तरी वियतनाम हो, वह आज भारत की तरफ देख रहे हैं और भारत ने जिस प्रकार बंगला देश की मदद की है उसी प्रकार ईमान-दारी से और भी राष्ट्र चाहे वह फिलस्तीन हो,

पख्तून हो या अन्य हों, वह अपनी आजादी के लिए हम से मदद मांगेंगे हम ईमानदारी से कहते हैं कि हम किसी देश की एक इंच जमीन भी नहीं लेंगे और उनकी हम मदद करेंगे क्यों कि वह हमारे भाई पड़ोसी हैं। हम किसी की एक इंच भी जमीन नही लेना चाहते। हम ने कभी किसी देश पर हमला नहीं किया। यहां सुबह से शाम तक जनसंघ पोस्टर लगाए जाते है कि कि एक इंच पीछे नहीं हटेंगे। काश्मीर हमारा अपना है, दूसरे कच्छ इत्यादि हिस्से हमारे अपने है। हम ने किसी पर हमला नही किया हम किसी का बुरा नहीं चाहते, फिर भी यहां यह कहा जाता है। अब मैं फिर विदेशी नेताओं के नाम लूंगा श्री निक्सन साहब की सरकार यह कहती है कि हम ने पाकिस्तान पर हमला किया, श्री चाऊ की सरकार यही कहती है, श्री भुट्टो कहते हैं तो हमारे यहां भी ये जनसंघी भाई कहते है कि हमने हमला किया है, जो लिया है वह देंगे नही।

अध्यक्ष महोदय, आज के युग मे इस प्रकार की बातों का कोई मतलब नही है, इसके अलावा जो एक लाख पाकिस्तानी कैदी है. . .

श्री हुकम चन्द कछवाय : हजारों जवानों ने जानें दी हैं, हम उसको वापस नहीं होने देंगे।

अध्यक्ष महोदय : यह अच्छा नही मालूम देता, आप क्यों बार-बार इन्टरप्ट करते हैं ?

श्री हुकम चन्द कछवाय : जिस भूमि के लिए हजारों जवानों ने जानें दी हैं, क्या वह वापस करेंगे ? हम उसको वापस नहीं होने देंगे।

अध्यक्ष महोदय : आप तो जैसे घर में बैठकर बातें करते हैं।

श्री हुकम चन्द कछवाय : यह पार्लियामेंट है, देश की सबसे बड़ी पंचायत है।

अध्यक्ष महोदय : आज माथे पर लाल-तिलक लगा हुआ है।

श्री शशि भूषण : हमारे देश में जो पाकिस्तान के कैदी हैं, उनके साथ हम सब से अच्छा व्यवहार करते हैं। लेकिन एक तरफ श्री भुट्टो कहते है कि हम उन्हें हिन्दू बना रहे हैं और यहां जो विपक्षी लोग बैठे है, वे कहते हैं कि युद्धबन्दियों के साथ अच्छा व्यवहार क्यों हो रहा हैं। दोनों में कोई फर्क नही है, जो बात भुट्टो बोलते हैं, उसी ढंग से इधर से बोलते हैं। हम ईमानदारी से चाहते है कि हमारे पडोसी सुख व शांति से रहे, लेकिन हम यह भी चाहते है कि जब तक हमे इस बात का आश्वासन न हो जाय कि पाकिस्तान की धरती से अब दूसरी गोली नहीं चलेगी, तब तक कोई निर्णय नही लेना चाहिए और इस दिशा में हमको सही कदम उठाना चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी सरकार, जैसा यहां कहा गया है कि दबाव मानती है, वह किसी का दबाव नहीं मानती है, निर्भीक और लोकतन्त्री सरकार है, और किसी दबाव के बगैर निर्णय लेगी हमें उस पर विश्वास है। हम इन्दिरा जी के नेतृत्व में विश्वास करते है और उन्हें पूर्ण समर्थन देते हैं।

इन शब्दो के साथ राष्ट्रपति जी के अभिभाषण का अनुमोदन करते हुए अपना भाषण समाप्त करता हूं।

SHRI SAMAR GUHA (Contai) : I had the privilege to visit Bangla Desh, and I had also the privilege to present a portrait of Netaji to Banga Bandhu and to the President of Bangla Desh, as also to button the emblem of Netaji on the collar of Bandhu and also of President of Bangla Desh. (*Interruption*) I do not know why the Delhi paper did not report it, (*Interruption*).

It is a matter of great pride for the whole of India that Banga Bandhu proclaimed before the Pressmen not only of Bangla

[Shri Samar Guha]

Desh but of India and other countries that he considers Netaji Subash Chandra Bose as his political guru. There were a number of celebrations—TV. and others held on Netaji's birthday at Dacca. Big celebrations were held in Bangla Desh. I want to draw your attention to these celebrations for the historical reason. As a humble follower of Netaji, I could never accept the concept of division of India— not in political sense but in historical, philosophical and ethical senses; it was my feeling that it crippled freedom and growth of our national renaissance—looking at the way the whole of the Indian people were submerged in communal bitternees and politics, The day will come when the dream and the ideals of Netaji will be fulfilled and a new India will emerge Bangla Desh is signal for that; that p ocess has started in Bangla Desh. The revolution in Bangla Desh will reverberate at the heart of Pakistan and in the whole of India. And I have no doubt that new days, the days of the ideals of Netaji are coming for us, for the whole of the people of the Indian sub-continent. In this background I have never looked upon the war between India and Pakistan as a war between two countries but, for historical, philosophical and also emotional perspective, it was to me. more or less, like a civil war among the people belonging to the same fraternity. So, in this perspective, I want to draw your attention to a report that has been published in the Pakistani Press that the prisoners of war of Pakistan are being ill-treated in India. I know it is wrong. I know very well they are given very good treatment, and about the unfortunate incident of firing on the prisoners of war of Pakistan tried to draw the attention of the Defence Minister that this matter should be clarified not only in India but for the whole world public opinin. We want that the prisoners of war should be treated as our brothers so that when they go back, they may go back as messengers of good human relations, they may go back as messengers of peace and amity, they may go back as messengers of secular amity and they may go back as messengers for the democratic, I sould say, resurgence not only in India but in Pakistan also.

As I started, I should say, Bangla Desh.

MR. SPEAKER : The hon Member's time is up.

SHRI SAMAR GUHA : At least ten minutes should be given.

MR. SPEAKER : You wanted only five minutes. Only two minutes more.

You have lured me by telling five minutes. Now you want ten minutes.

SHRI SAMAR GUHA : From this time, I wanted to draw your attention to the fact that in this august House in my first speech I had the privilege to draw the attention of the Government that something should be done to discharge our national obligation to one of the greatest national heroes of our times, Netaji Subhas Chandra Bose. I am thankful to the Government that something has been done. There was a time when even the name of Netaji was taboo on the All India Radio. That is not so now. But much more remains to be done. Through a question, I wanted to know how much the Government have spent to as knowledge the contribution of Mahatma Gandhi and Pandit Jawaharlal Nehru to history. They had their own contribution to the national freedom and national renaissance in their own field and in their own way. I am very glad that the Government has incurred quite a lot of expenditure to acknowledge that contribution of Gandhiji and Pandit Nehru. They spent Rs. 3.50 crores for the purpose of acknowledging the contribution of Gandhiji and Rs. 3.35 crores for Pandit Nehru, But, it is a matter of shame and disgrace also, that less than Rs. 2 lakhs only have so far been spent for Netaji Subhas Bose.

I want to draw your attention to another point. Recently, the Government has taken an admirable step. There is a scheme for giving pensions to the freedom fighters but the pension scheme to the freedom fighters that has been enunciated by the Government has been circumvented for, only those who fought on the mainland and those who underwent imprisoment for at least six months are eligible. But, as you know, the valiant INA men who fought out side India for India, for the liberation India—more than 10,000 and some say 26,000 valiant freedom fighters have sacrificed their lives. A few months back General Auchinleck has made a disclosure that during the INA trial, when the Red Fort

trial was going on, the secretly informed Attlee that if power was not transferred to the Indians within a short time, there would be a repetition of the Sepoy rebellion of 1885. That was the reason why the Cabinet Mission headed by Pethick Lawrence came to India. Don't we owe an obligation to these freedom fighters of INA ? Will they not be covered by the pension scheme ?

MR SPEAKER : The hon. Member's time is up.

SHRI SAMAR GUHA : I beg of you, Sir, to give me a few minutes more. I have something more to say.

MR SPEAKER : I cannot allow any more time.

SHRI SAMAR GUHA : Only five minutes more, Sir I beg of you I have something to say about Netaji Inquiry Commission-a very important point I am not raising any controversy

MR. SPEAKER : You came to me saying that you will speak only for 3 or 4 minutes. Your Party has completely exhausted its time. You wanted only two to three minutes Now you are not stopping with ten minutes even.

13 hrs.

SHRI SAMAR GUHA : I obey you, Sir.

I want to draw the attention of the Government to the obligation to see that the INA prisoners should also be included in the catogory of the freedom-fighters so that they may be entitled to have the benefit of the pension etc. to which other freedom fighters are entitled.

Regarding the Netaji Inquiry Commission, I am sorry to note that Mr. Khosla is not being allowed to visit Formosa, the place of occurrence of the supposed plane crash. I do not know what stands in the way. I don't know why the Government is not allowing Mr. Justice Khosla to go there. A number of railway engineers and Central Government officials etc. are visiting Formosa and we have our trade and commerce relation with Formosa worth several crores of rupees. Still, I do not know why Mr. Justice Khosla is not allowed to go there. I say this because the supposed occurrence of the plane crash is in Formosa and without going there, the Khosla Inquiry Commission cannot complete its work. I don't know why the Government is standing in the way, And also it was proposed and the Prime Minister herself agreed that there should be action counsel to assist the Khosla Commission, but now, the Commission has completed almost half of the work and no counsel has yet been appointed.

And, lastly, Sir, I wish to say that. Many other documents that are connected with Netaji, the various intelligence reports, the American Intelligence Report, the British Intelligence report and the Russian Intelligence report, should be made available to the Commission, for scrutiny and investigation. It has been accepted by all, even by the spokesmen of the Japanese Government, that Netaji had undertaken certain negotiations with Russia because his intention was to go to Russia after the fall of Japan. That is the reason why these Intelligence reports should be made available to the Netaji Enquiry Commission.

Sir, Government has accepted the view that a fresh inquiry should be made about Netaji. If the Government has accepted that obligation, it should be discharged fully, honestly, completely and entirely, so that the Netaji mystery can be resolved for good.

MR. SPEAKER : Shri Chandrajit Yadav He may just rise; he will continue after lunch.

SHRI CHANDRAJIT YADAV (Azamgarh) : *rose—*

MR. SPEAKER : The House stands adjourned to meet at 2 P.M.

13.03 hrs.

The Lok Sabha Adjourned for Lunch till Fourteen of the Clock